"सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति विद्यार्थी अध्यापक/अध्यापिकाओं, प्रधानाध्यापक एवं अभिभावकों का अभिमत"

डॉ. रचना राठौड़
सहा–आचार्य
जनार्दन राय नागर राजस्थान विद्यापीठ (डीम्ड–टू–बी विष्वविद्यालय,
डबोक, उदयपुर(राज.)

1.प्रस्तावना

मूल्यांकन एक प्रक्रिया है, सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली का अभिन्न अंग है और यह शिक्षा के उद्देश्यों से सम्बन्धित रूप से सम्बन्धित हैं। मूल्यांकन पर बालक और अध्यापक के अध्ययन और अध्यापन की प्रणाली निर्भर करती है। अतः यह वैज्ञानिक मूल्यांकन शिक्षा का अविभाज्य अंग है, परन्तु यह भी निर्विवाद है कि मूल्यांकन पूरे व्यक्तित्व का न कि केवल स्मृति अथवा शैक्षिक योग्यता का है।

भारतीय शिक्षा प्रजातंत्र की आवश्यकताओं तथा उत्तरदायित्वों को देखते हुए यर्थष्टध्यान नहीं दे पाती है। इसका मुख्य कारण है वर्तमान शिक्षा प्रणाली एवं परीक्षा प्रणाली का विकास उचित ढंग से एवं उद्दश्यों पर आधारित नहीं हो पा रहा है। बालक के सर्वांगीण विकास की दृष्टि से ऐसे पक्ष भी है जिनका विकास कक्षागत कार्यक्रम की अपेक्षा पाठ्येत्तर प्रवृतियाँ के माध्यम से अधिक सरलता से लिया जा सकता हैं। इस प्रकार बालक के विकास में पाठ्यन्तर प्रवृतियों का कक्षागत कार्यक्रम की तुलना में कम महत्व नहीं हैं।

"वैयक्तिक स्तर पर छोटे पैमाने पर अथवा संस्थात्मक स्तर पर बड़े पैमाने पर एक योजनाबद्ध प्रयास के रूप में शिक्षा का लक्ष्य बच्चों के सक्रिय, जिम्मेदार, उत्पादक और ध्यान रखने वाले सदस्य बनने के योग्य बनाना है। उन्हें कौशल और विचार प्रदान करके समाज की विभिन्न रीतियों से सुपरिचित कराया जाता है। आदर्श रूप में, शिक्षा से यह अपेक्षा की जाती है कि वह विद्यार्थियों को अपने अनुभवों का विश्लेषण करने, उनका मूल्यांकन करने, संदेह करने, प्रश्न पूछने और अन्वेषण करने के लिए दूसरे शब्दों में, उन्हें जिज्ञासु और स्वतंत्र रूप से सोच–विचार करने के लिए प्रोत्साहित करेगी।

किसी भी देश की उन्नति उसके मानवीय संसाधनों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। मानवीय संसाधनों को गुणवत्तापूर्ण बनाने की जिम्मेदारी वहां की शिक्षा व्यवस्था पर निर्भर होती है। क्योंकि शिक्षा का मुख्य उद्देश्य व्यक्ति का सर्वांगीण विकास करना हो। व्यक्ति के सर्वांगीण विकास का आधार उसके पर्यावरण अर्थात् शैक्षिक, सह–शैक्षिक, साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं खेलकूद आदि पाठ्योत्तर प्रवृत्तियों के सुसंचालन पर निर्भर करता हैं।

शिक्षा ही वह साधन है जिससे मनुष्य सामान्य से विशिष्ट बनता है। यह उसकी कार्यशैली, गुण एवं विशिष्ट उपलब्धियों में परिवर्तन लाती है। भारत के संदर्भ में शिक्षा के महत्व को स्पष्ट करते हुए कोठारी आयोग ने अपनी रिपोर्ट में लिखा है कि शिक्षा ही एक ऐसा उपकरण है जो भारत के सामाजिक आर्थिक–कल्याण कोष में परिवर्तन ला सकती हैं।

मूल्यांकन का प्रयोज्य यह देखना है कि क्या निर्धारित कार्यक्रम भली प्रकार चल रहा है, क्या कोई संस्था अपने लिए निर्धारित लक्ष्यों के अनुसार सफल है और क्या मूल आशय को सफलतापूर्वक किया जा रहा है। इसका कार्य किसी प्रक्रिया, उत्पाद अथवा कार्यक्रम की सामाजिक उपयोगिता, वांछनीयता अथवा प्रभावकारिता निर्धारित करना है और इनमें कुछ कार्यवाही की सिफारिश करना भी शामिल है। मूल्यांकन का अर्थ केवल शिक्षा प्राप्ति के परिणामों के स्तर को मापना नहीं है बल्कि यह प्रणाली में और अधिक सुधार करने की एक पद्धति भी है। विद्यार्थियों को सुधारात्मक सहायता प्रदान करने के लिये जरूरी है कि मूल्यांकन का स्वरूप नैदानिक और रचनात्मक प्रकार का हो।

''बाह्य परीक्षाएँ 21वीं शताब्दी के ज्ञान–समाज में और नवाचारी समस्या समाधानकर्ताओं की आवश्यकता के लिए अधिकांशतः अनुपयुक्त होती है। यदि प्रश्न अच्छी तरह से तैयार न किए गए हो तो उनके लिए केवल रटने और याद करने की आवश्यकता होती है और वे विवेचन और विश्लेषण मनन सृजनात्मकता और मूल्यांकन जैसे उच्च स्तर के कौशलों को जांचने में असफल रहे हैं।

बाह्य परीक्षाएँ भिन्न प्रकार के शिक्षार्थियों को शिक्षा प्राप्ति के भिन्न प्रकार के वातावरण के लिए कोई गुंजाइश नहीं छोड़ती और वे चिंता और दबाव का एक असाधारण स्तर उत्पन्न करती है। ''इसलिए स्कूल आधारित मूल्यांकन के लिए एक कार्यात्मक और विश्वसनीय प्रणाली की आवश्यकता महसूस की गई हैं।

(एन.सी.एफ. परीक्षा सुधारों के बारे में स्थिति पत्र)

हमें शिक्षार्थी के सम्पूर्णतावादी मूल्यांकन की और देखने की आवश्यकता है जिसमें जीवन–कौशलों अभिवृत्तियों और मूल्यों जैसे गुणों, खेलों तथा सह–पाठ्यक्रम क्रियाकलापों के विशेष संदर्भ में शिक्षार्थी की संवृद्धि के शैक्षिक और सह–शैक्षिक दोनों क्षेत्र शामिल है। सी.सी.ई. योजना का लक्ष्य इसकी और सम्पूर्णतावादी तरीके से ध्यान देना हैं।

''शिक्षा को हमारे बच्चों, जहाँ तक संभव हो उतनी अधिक क्षमताओं और कौशलों को बढ़ावा देना चाहिए और उनका पोषण करना चाहिए। ऐसे कौशलों की परिधि में प्रदर्शन और अभिनय कलाएँ (संगीत नाटक आदि) चित्रकला और शिला और साहित्यिक योग्यताएँ (कथा–लेखन, जीवन के विभिन्न पहलुओं

के चित्रांकन के लिए भाषा का उपयोग, कलांकारित और काव्यात्मक अभिव्यक्ति की प्रवृत्ति आदि) शामिल है। इसके अलावा बच्चों के अत्यंत विविध कौशलों का जैसे कुछ बच्चों का प्रकृति के साथ जैसे पेड़ों पक्षियों और पशुओं के साथ जुड़ने की विशेष क्षमता का पोषण किया जाना जरूरी हैं।

हमारे देश में शिक्षा के स्तर को ऊँचा उठाने एवं शिक्षा को सर्वांगीण बनाने हेतु आवश्यक है कि शिक्षा में सिर्फ ज्ञान के साथ अन्य कौशलों का भी विकास किया जाये।

इस हेतु आवश्यक है कि शिक्षा में न केवल रटे हुए प्रश्नों का मूल्यांकन किया जाए अपितु सभी पहलुओं, शैक्षिक व सह–शैक्षिक का मूल्यांकन किया जाए।

''सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन (सी.सी.ई.) का आशय विद्यार्थियों के विद्यालयों आधारित मूल्यांकन की उस प्रणाली के बारे में है, जिसमें विद्यार्थियों के विकास के सभी पहलुओं की ओर ध्यान दिया जाता हैं।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन का उद्देश्य विद्यार्थियों, योग्यताएँ अभिवृतियों और अभिरूचियों को विकसित कर विद्यार्थियों को अपनी क्षमताओं का ज्ञान कराना हैं।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम के प्रति विद्यार्थियों, अध्यापकों अभिभावकों तथा प्रधानाध्यापक का क्या अभिमत है, वे इस कार्यक्रम के बारे में क्या सोचते हैं, क्या अनुभव है, उनका दृष्टिकोण क्या हैं।

विद्यार्थियों, अध्यापकों/अध्यापिकाओं, अभिभावकों व प्रध्यानाध्यापक के अभिमत का पता लगाने के लिए इस समस्या के अध्ययन का निर्णय किया गया हैं।

2.समस्या कथन

किसी भी शोध कार्य में समस्या का महत्वपूर्ण स्थान रहता है।इसका अर्थ केवल प्रबन्ध के शीर्षक मात्र से नहीं है, बल्कि इससे अधिक सम्पूर्ण शोध कार्य का कल्पनात्मक चित्र मस्तिष्क में बन जाता है।

शिक्षा में गुणवत्ता लाने हेतु सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम 2010 से आरम्भ किया गया है। पूर्व मूल्यांकन कार्यक्रम से सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम अत्यधिक महत्वपूर्ण व रोचक है। अतः शोधकर्त्ता ने अपने लघु शोध प्रबन्ध के लिए सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम के कुछ क्षेत्रों की जानकारी प्राप्त करने का प्रयास किया है।

इसके आधार पर विद्यार्थियों, अध्यापकों अभिभावकों एवं प्रधानाध्यापक का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिमत का पता लगाया जा सकता है।

शोधकर्त्ता द्वारा अध्ययन के लिए चुना गया विषय इस प्रकार है– **''सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति विद्यार्थी अध्यापक/अध्यापिकाओं, प्रधानाध्यापक एवं अभिभावकों का अभिमत''**

3. अध्ययन के उद्देश्य

किसी भी समस्या पर शोध कार्य करने से पूर्व शोधकर्त्ता को उसके उद्देश्यों को निर्धारित करना होगा तभी हम उचित लक्ष्य को प्राप्त कर सकते हैं। उद्देश्यों के ज्ञान के अभाव में शोधकर्ता उस नागरिक के समान हैं जो अपने लक्ष्य की मंजिल को नहीं जानता है। उद्देश्यों का स्तर, लक्ष्यों का निर्धारक कार्य को निरंतर गति एवं गरिमा प्रदान करता है तथा अध्ययन कार्य में सफलता मिलती हैं। (प्रस्तुत अध्ययन के निम्न उद्देश्य हैं) –

1) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम के प्रति विद्यार्थियों के अभिमत का पता लगाना।
2) सतत् व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम के प्रति अध्यापक/अध्यापिकाओं के अभिमत का पता लगाना।
3) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम के प्रति प्रधानाध्यापक के अभिमत का पता लगाना।
4) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम के प्रति अभिभावकों के अभिमत का पता लगाना।
5) समस्त समूहों के अभिमत का पता लगाना।
6) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम में आ रही समस्याओं का पता लगाना।
7) सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम की समस्याओं के समाधान हेतु सुझाव देना।

4.परिसीमन

अधिस्नातक स्तर पर शोध करने वक्त साधन व समय की कमी अनुभव की जाती है। शोधकर्त्ता का अध्ययन क्षेत्र काफी विस्तृत है अतः समस्या का परिसीमन करना आवश्यक है, इससे समस्या का स्पष्टीकरण भली भांति किया जा सकता है।

समस्या जितनी सीमित व स्पष्ट होगी अध्ययन कार्य भी उतनी गहनता से किया जा सकेगा तथा साथ ही शोध कार्य की उपादेयता भी उतनी ही बढ़ेगी, अतः सीमित समय व साधनों को ध्यान में रखकर निम्नांकित परिसीमाऐं निर्धारित की गई है।

1) **क्षेत्र** – प्रस्तुत अध्ययन में उदयपुर जिले के 10 ब्ैम्विद्यालयों का चयन किया गया हैं।

2) **अवधि** – 2010–11 में सी.सी.ई. कार्यक्रम से गुजर चुके विद्यार्थी, अध्यापकों का चयन किया गया हैं।

3) **लिंग** – इस अध्ययन में बालक, बालिकाओं, अध्यापक/अध्यापिकाओं, प्रधानाध्यापक/प्रधानाध्यापिकाओं तथा स्त्री, पुरूष अभिभावकों को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया है।

5. परिभाषिक शब्दों की व्याख्या

''समस्या के परिभाषिक शब्दों को स्पष्ट करने का तात्पर्य उसमें प्रयुक्त शब्दों को विस्तृत रूप व सही प्रकार से सुनियोजित बनाना हैं।''

1) **विद्यार्थी**

वे बच्चे जो विद्यालय में अध्ययन करने जाते है। यह वे है जो सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम लागू किये गए विद्यालयों में अध्ययन कर रहे है।

2) **सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन**

यह एक प्रक्रिया है जो अधिगम के सभी आयामों अर्थात् शैक्षिक व सहशैक्षिक पक्ष के विकास के नियमित आकलन हेतु संपूर्ण प्रारूप प्रदान करता है। यह विद्यार्थियों के उन सकरात्मक गुणों को भी खोजता है जिनका आकलन बोर्ड द्वारा ली गई परीक्षा के दौरान अक्सर नहीं हो पाता।

3) **माध्यमिक स्तर**

माध्यमिक स्तर से तात्पर्य विद्यालय की कक्षा नवीं एवं दसवीं से हैं।

4) **अध्यापक**

वे पुरूष या महिला कर्मचारी जो सरकारी एवं निजी विद्यालयों में अध्यापन कार्य करवाते हैं अध्यापक की श्रेणी में आते हैं।

5) **प्रधानाध्यापक**

विद्यालय का सर्वोच्च पदाधिकारी जिसके निर्देशन एवं निर्णय से विद्यालय के समस्त शैक्षिणक एवं प्रशैक्षिक क्रियाकलाप संचालित होते है।

6) **अभिभावक**

वे व्यक्ति जो बच्चों का पालन पोषण एवं इनके संरक्षण का कार्य करते है वह अभिभावक की श्रेणी में आते हैं।

6.समस्या का औचित्य

किसी भी देश की उन्नति उसके मानवीय संसाधनों की गुणवत्ता पर निर्भर करती है। मानवीय संसाधनों की गुणवत्ता पूर्ण बनाने की जिम्मेदारी वहां की शिक्षा व्यवस्था पर होती है। किसी भी शिक्षा व्यवस्था में मूल्यांकन की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं।

मूल्यांकन में यह स्पष्ट होना आवश्यक है कि मूल्यांकन के लक्ष्य क्या है, क्या मूल्यांकन से शिक्षा की सार्थकता स्पष्ट हो पा रही है या नहीं।

हमारे संविधान में यह स्पष्ट रूप से उल्लेखित है कि शिक्षा को किन मूल्यों व आदर्शों के लिए कार्य करना चाहिए।

परीक्षाएँ शिक्षा प्रक्रिया के अपरिहार्य भाग है, क्योंकि अध्यापन और सीखने के प्रक्रियाओं का प्रभावकारिता का पता लगाने के लिए किसी न किसी प्रकार का मूल्यांकन करना आवश्यक है।

विभिन्न आयोगी और समितियों ने परीक्षा सुधारों की आवश्यकता महसूस की है। हंटर अयोग 1882 कलकत्ता विश्वविद्यालय आयोग (1917–19) हारटोग समिति रिपोर्ट (1929) केन्द्रीय सलाहकार बोर्ड/सार्जेट योजना (1944), माध्यमिक शिक्षा आयोग। मुदालियर आयोग (1952–53) इन सबने बाइय परीक्षाओं पर दिए जाने वाले जोर को घटाने और सतत् तथा व्यापक मूल्यांकन के जरिए आतंरिक मूल्यांकन को प्रोत्साहन देने के बारे में सिफारिशें दी हैं।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में शैक्षिक और गैर शैक्षिक दोनों पहलू पर ध्यान दिया गया।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 1986 (एन.पी.ई.) की समीक्षा करने वाली समिति की रिपोर्ट– भारत सरकार द्वारा 1991 में प्रकाशित सिफारिश में ''सतत् एवं आंतरिक मूल्यांकन के माप दंड तय किए गए है और इस मूल्यांकन प्रणाली के दुरूपयोग को रोकने के सुरक्षोपायों के सुझाव दिए गए हैं।

एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा तैयार किए गए ''परीक्षा सुधार संबधी स्थिति पत्र 2006 में कहा गया कि ''वास्तव में हमारा यह है कि दसवीं ग्रेड परीक्षा को अभी से वैकल्पिक बना दिया जाना चाहिए।

स्पष्टतः सी.सी.ई. को कार्यान्वित करने में नेतृत्व प्रदान करने और एक पथ प्रदर्शक की भूमिका निभाने के लिए केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड का प्रयास एक प्रमुख कदम है।

बालकों को देश का भविष्य माना जाता है अगर उन्हीं की शिक्षा सर्वांगीण व गुणवत्ता पूर्ण न हो तो देश के राजनीतिक सामाजिक आर्थिक क्षेत्र पर प्रभाव पड़ता हैं।

मूल्यांकन प्रणाली की शिक्षा में महत्वपूर्ण भूमिका है अतः उसके क्रियान्वयन का चिन्तन करना नितान्त आवश्यक हो जाता है। इसलिए शोधकर्ता ''सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति विद्यार्थियों, अध्यापकों, प्रधानाध्यापकों एवं अभिभावकों के अभिमत को चुना है।

अनुसंधान हेतु चयन की गयी किसी भी समस्या का औचित्य परीक्षण करना आवश्यक है, क्योंकि औचित्य ही समस्या का उपादेयता को सिद्ध करता है।

प्रस्तुत समस्या के संदर्भ को निम्न दृष्टिकोण से विचार किया जा सकता है।

1. **मनोवैज्ञानिक दृष्टि कोण से महत्व**

इस अध्ययन के माध्यम से यह पता लगाया जा सकता है कि विद्यार्थी एवं शिक्षकों में सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति कितनी रूची है, वे स्वयं रूचि ले रहे है या अनिवार्यता के कारण स्वीकार कर रहे है। इस कार्य को क्रियान्वित करने में तनाव का अनुभव तो नहीं कर रहे हैं।

2. **व्यवसायिक दृष्टि से महत्वपूर्ण**

प्रत्येक बालक का जीवन सुखी एवं खुशहाल बनाने के लिए आवश्यक है कि शिक्षा को सर्वांगीण बनाया जाए तथा उसे स्वरोजगारोन्मुखी बनाने हेतु बालक को स्वयं की क्षमताओं का ज्ञान कराना आवश्यक है जो शिक्षा काल में सभी पहलुओं को विकसित कर एवं विद्यार्थी को अवसर प्रदान कर के करवाया जा सकता है ताकि वह सामाजिक कृतव्यों का निर्वाह कर सके, श्रेष्ठ नागरिक बन सके।

सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के माध्यम से जीवनोपयोगी समस्त कौशलों, अनुशासन, नैतिकता, व्यवहारिक ज्ञान को विकसित किया जा रहा है, इस संदर्भ में विद्यार्थियों एवं अध्यापकों का अभिमत जानकर उसे सुदृढ़ बनाने के उपाय खोजना आवश्यक हैं।

3. **शैक्षिक दृष्टि से महत्वपूर्ण**

प्रस्तुत अध्ययन के माध्यम से सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन में आने वाली समस्याओं का पता लगेगा तथा इस कार्य के प्रति दृष्टिकोण की जानकारी प्राप्त होगी। इससे समस्याओं को दूर करने के सुझावों के माध्यम से कार्यक्रम को रोचक बनाया जा सकेगा, ताकि भविष्य में कार्यक्रम में गुणवत्ता आ सके व शैक्षिक स्तर में सुधार हो।

4. **सामाजिक दृष्टि से महत्वपूर्ण**

श्रेष्ठ शिक्षा के माध्यम से समाज और राष्ट्र का निर्माण होता है। विद्यार्थियों को देश का भविष्य माना जाता है अतः देश का विकास तभी संभव है जब वहाँ की शिक्षा व्यवस्था व मूल्यांकन प्रणाली श्रेष्ठ व दोष रहित हो। अतः सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम के प्रति विद्यार्थियों, अध्यापकों, प्रधानाध्यापकों व अभिभावकों का अभिमत ज्ञात करना आवश्यक है ताकि सुदृढ़ बनाया जा सके एवं सम्पूर्ण शिक्षा प्रणाली में लागू किया जा सके।

5. **अनुसंधान की दृष्टि से महत्वपूर्ण**

इस अध्ययन के माध्यम से भविष्य में इस क्षेत्र के अनुसंधान कार्यों का सुझाव दिया जा सकेगा, ताकि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन को स्थापित प्रदान हो सके।

7. न्यादर्श

किसी भी शोध कार्य की विश्वसनयता व सफलता न्यादर्श पर निर्भर करती है। अतः जैसा न्यादर्श होगा वैसे ही परिणाम हमारे सामने आयेंगे। न्यादर्श तभी उपयोगी माना जाता है, जब वह समष्टि (जनसंख्या) का ठीक–ठाक प्रतिनिधित्व करें एवं पूर्वाग्रह से रहित हो।

पारसना के अनुसार ''न्यादर्श के चयन में दक्षता में वृद्धि और फल की शुद्धता मिलती है।''

शोधकर्ता द्वारा पूरी सावधानी और निष्ठा के साथ न्यादर्श का चयन किया जायेगा। जो कुल जनसंख्या का प्रतिनिधित्व कर सके। शोधकर्ता ने राजस्थान के उदयपुर जिले का चयन किया है।

उदयपुर जिले में अध्ययनरत् ब्ठैम विद्यालय के 10वीं कक्षा के विद्यार्थियों तथा अध्यापकों/अध्यपिकाओं तथा प्रधानाध्यापकों व अभिभावकों को चुना है।

8. विधि–प्रविधि एवं उपकरण

विधि–प्रविधि एवं उपकरण अनुसंधान रूपी भवन के आधाभूत एवं महत्वपूर्ण नींव के सुदृढ़ प्रस्तुत है, जिसकी अनुपस्थिति में एक अनुसंधानकर्ता अनुसंधान रूपी भवन का निर्माण नहीं कर सकता। किसी भी अनुसंधान में प्रयुक्त विधि एवं उपकरणों का महत्वपूर्ण योगदान रहता है कोई भी अनुसंधान कार्य उसकी प्रकृति के अनुरूप विधि–प्रविधि से युक्त होकर ही अपने लक्ष्यों तक पहुंच सकता है। इसके अभाव में यह तथ्य हीन सिद्ध होगा।

1) विधि

''अध्ययन विधि वह मार्ग है जिस पर चलकर साथ की खोज की जा सकती है।'' यदि अनुसंधानकर्ता अपनी अध्ययन विधि की व्याख्या स्पष्ट रूप से नहीं कर सकता है तो परिणामों के अत्यधिक अविश्वसनीय और अवैध होने की संभावना रहती है। प्रस्तुत अध्ययन समूह पर आधारित है अतः सर्वेक्षण विधि का चयन किया गया है।''

इस विधि के बारे में **सुखिया एवं मेहरोत्रा** (1984) का कहना है कि ''सर्वेक्षण विधि ऐसे अध्ययन के लिए प्रयुक्त की जाती है जिसका उद्देश्य यह ज्ञान करना होता है कि वर्तमान काल में सामान्य अथवा प्रतिनिधि स्थिति व व्यवहार क्या है।''

2) प्रविधि

प्रविधि के अन्तर्गत शैक्षिक अनुसंधान सांख्यिकी का प्रयोग किया जायेगा।

प्रतिशत सांख्यिकी।

3) उपकरण

शोधकर्ता द्वारा अभिमत मापनी प्रस्तुत अध्ययन में स्व निर्मित उपकरण (प्रश्नावली) का उपयोग किया जायेगा। प्रत्येक प्रकार के अनुसंधान के लिए नवीन दत्त संकलित करने के लिए उपकरणों की आवश्यकता होती है। इन्हीं को उपकरण कहते हैं।

9. शोध परिणाम

प्रस्तुत शोध के परिणाम से प्राप्त निष्कर्ष इस प्रकार है–

9.1 विद्यार्थियों के अभिमत से प्राप्त निष्कर्ष

1. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम के तहत जुलाई से सितम्बर तक ॅएमूल्यांकन कार्यक्रम के प्रति 19 प्रतिशत विद्यार्थी आयोजित ही जानकारी रखते है।
2. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम पूर्व मूल्यांकन कार्यक्रम से अधिक रोचक है इसे 87 प्रतिशत विद्यार्थी स्वीकार करते है।
3. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम की गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थियों का ज्ञान में वृद्धि हो जा रही है इस बात को 96 प्रतिशत विद्य़ार्थी स्वीकार करते है।
4. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से विद्यार्थी तनाव युक्त महसूस करते हैं इस कथन से 91 प्रतिशत विद्यार्थी सहमत है।

5. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम की विभिन्न गतिविधियों के माध्यम से विद्यार्थी एवं के विचार प्रस्तुत करने में सफल होते हैं इस कथन से 94 प्रतिशत विद्यार्थी सहमत हे।
6. आप मंच पर कहानी एवं कविता बोलने में महसूस करते हो इस कथन को 87 प्रतिशत विद्यार्थियों ने अस्वीकार किया है।
7. 62 प्रतिशत विद्यार्थी सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम के तहत दिये जाने वाले गृह कार्य से संतुष्ट है।
8. 76 प्रतिशत विद्यार्थी सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम के कार्यों को सहयोग के माध्यम से पूर्ण करते हैं।
9. 88 प्रतिशत विद्यार्थियों ने स्वीकार किया है कि वे सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम की विभिन्न गतिविधियों के कारणप्दजमतदमजका उपयोग करते हैं।
10. 88 प्रतिशत विद्यार्थी स्वीकार करते हैं कि वे सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रक्रिया के माध्यम से अपनी विषयवस्तु को समझने में सफल है।
11. 83 प्रतिशत विद्यार्थी मानते हैं कि प्रोजेक्ट निर्माण से उनमें करके सीखने की आदत का विकास हुआ है।
12. 86 प्रतिशत विद्यार्थी स्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम की विभिन्न गतिविधियों से उन्हें उनकी योग्यताओं का पता लगता है।
13. 89 प्रतिशत विद्यार्थियों का मत है कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम की ''ग्रेडिंग'' प्रणाली ने विद्यार्थियों में प्रतिस्पर्दा की भावना खत्म कर दी हैं
14. 90 प्रतिशत विद्यार्थी स्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम के कारण उनकी रटने की आदत कम हो गई है।
15. 83 प्रतिशत विद्यार्थी सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से परेशानी महसूस नहीं कर रहे है।
16. 72 प्रतिशत विद्यार्थी पूर्व मूल्यांकन कार्यक्रम की अपेक्षा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम की अपेक्षा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से सहमत हैं।
17. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से पूर्ण मूल्यांकन के प्रति 19 प्रतिशत विद्यार्थियों का सही उत्तर प्राप्त हुआ है।
18. विद्यार्थी स्वयं के व्यवहार का अनुमान स्वयं नहीं लगा सकता इस बात से 18 प्रतिशत विद्यार्थी सहमत है।
19. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से शिक्षा का व्यय बढ़ गया है इस बात को 62 प्रतिशत विद्यार्थी स्वीकार नहीं करते है।

20. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम में निष्पक्ष मूल्यांकन हो रहा है इस बात को 95 प्रतिशत विद्यार्थी स्वीकार करते हैं।

विद्यार्थियों का सतत्एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिमत सकारात्मक पाया गया।

9.2 अध्यापकों का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम के प्रति अभिमत से प्राप्त निष्कर्ष–

1. सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली लागू होने से पहले शिक्षण होना चाहिए था। 100 प्रतिशत अध्यापक इस कथन में स्वीकार करते है।
2. 85 प्रतिशत अध्यापक स्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम के माध्यम से विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास हो पा रहा है।
3. 100 प्रतिशत अध्यापक स्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से विद्यार्थियों को रटने की आदत कम हो गई है।
4. 33.33 प्रतिशत अध्यापका स्वीकार करते है कि एक ही कक्षा में 50–60 विद्यार्थियों का मूल्रूांकन करने में कठिनाई महसूस करते है।
5. 71.66 प्रतिशत अध्यापक स्वीकार करते हैं कि विद्यार्थी सहशैक्षणिक गतिविधियों में स्वः इच्छा से भाग लेते है।
6. 30 प्रतिशत अध्यापक इस कथन से सहमत है कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम की गतिविधियों से अध्यापकों का कार्यभार बढ़ गया है।
7. 8.0 प्रतिशत अध्यापक इस कथन को अस्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति रूझान कम हो गया है।
8. 45 प्रतिशत अध्यापका स्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम के दोहरान दिये गये गृहकार्य को विद्यार्थी समय पर समाप्त कर लेते है।
9. 55 प्रतिशत अध्यापक स्वीकार करते है कि प्रोजेक्ट के माध्यम से विद्यार्थी स्वयें पाठ्यवस्तु को समझने में सफल हो पाते है।
10. 100 प्रतिशत अध्यापक स्वीकार करते है कि सहगामी क्रियाओं के माध्यम से प्रतिभावान विद्यार्थियों का पता लगता है।
11. 70 प्रतिशत अध्यापक इस कथन को अस्वीकार करते है कि अन्य गतिविधियों में व्यस्त रहने के कारण विद्यार्थी पाठ्यक्रम की तैयारी नहीं कर पाते है।

12. 81.66 अध्यापकों का मानना है कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के कारण अध्यापक वर्ग अतिरिक्त दबाव महसूस नहीं कर रहा हैं।
13. 100 प्रतिशत अध्यापक पूर्व मूल्यांकन कार्यक्रम की अपेक्षा सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम का पसन्द करते है।
14. 88.33 प्रतिशत अध्यापकों का अभिमत है कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से विद्यार्थियों की रूचि का पता लगता है।
15. 38.33 प्रतिशत अध्यापक स्वीकार करते है सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से विद्यार्थियों पर आर्थिक भार बड़ गया है।

अध्यापकों का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम के प्रति अभिमत सकारात्मक पाया गया।

9.3 प्रधानाध्यापकों का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन के प्रति अभिमत

1. 40 प्रतिशत प्रधानाध्यापक स्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम को समझने में शिक्षकगण कठिनाई महसूस कर रहे है।
2. 100 प्रतिशत प्रधानाध्यापक स्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम प्रारम्भ होने से पहले प्रशिक्षण कार्यक्रम होना चाहिए था।
3. 100 प्रतिशत प्रधानाध्यापकों का मानना है कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से शिक्षा के स्तर में सकारात्मक परिवर्तन होगा।
4. 100 प्रतिशत प्रधानाध्यापक अस्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से अभिभावकों की शिक्षा संबंधी समस्याऐं बढ़ी है।
5. 60 प्रतिशत प्रधानाध्यापक स्वीकार करते हैं कि इस कार्यक्रम में समय अधिक लग रहा है।
6. 100 प्रतिशत प्रधानाध्यापक अस्वीकार करते हैं कि इस मूल्यांकन प्रणाली के कारण अध्यापक एवं विद्यार्थी दबाव महसूस कर रहे हैं।
7. 100 प्रतिशत स्वीकार करते है कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से विद्यार्थियों के वयवहार में सकारात्मक परिवर्तन हुआ।
8. 100 प्रतिशत प्रधानाध्यापक अस्वीकार करते है कि ग्रेडिंग प्रणाली के कारण विद्यार्थियों में पढ़ाई के प्रति रूझान कम हो गया है।

9. 100 प्रतिशत प्रधानाध्यापक स्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से विद्यार्थियों के समस्त कौशलों का पता लगता है तथा नई प्रतिभाओं का पता लगता हें
10. 60 प्रतिशत प्रधानाध्यापक अस्वीकार करते हैं कि ग्रेडिंग अंक तालिका के प्रति विद्यार्थियों एवं अभिभावकों का रूझान कम हो गया है।
11. 60 प्रतिशत प्रधानाध्यापक स्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन प्रणाली मे सुधार की आवश्यकता है।
12. 100 प्रतिशत प्रधानाध्यापक अस्वीकार करते है कि ग्रेडिंग प्रणाली अस्वीकार कर देनी चाहिए।
13. 100 प्रतिशत प्रधानाध्यापक स्वीकार करत है कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम मे विद्यार्थियों एवं अध्यापकों के समय का सदुपयोग हो रहा है।
14. 100 प्रतिशत प्रधानाध्यपक स्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से विद्यार्थी वर्ष पर्यन्त सक्रिय रहते है।
15. 100 प्रतिशत प्रधानाध्यापक स्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम प्रणाली से विद्यार्थियों के अनुशान में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है।

प्रधानाध्यापकों का अभिमत सकारात्मक पाया गया।

9.4 अभिभावकों का सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम के प्रति अभिमतसे प्राप्त निष्कर्ष

1. 88.33 प्रतिशत अभिभावक सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम की विभिन्न गतिविधियों से संतुष्ट है।
2. 68.33 प्रतिशत अभिभावक ग्रेडिंग प्रणाली के प्रति सकारात्मक अभिमत रखते है।
3. 48.33 प्रतिशत अभिभावकों का मानना है कि बच्चे प्रोजेक्ट निर्माण में अधिक समय लगा रहे है।
4. 35 प्रतिशत अभिभावक स्वीकार करते है कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम से बच्चों के सभी कार्यों का मूल्यांकन हो पा रहा हैं
5. 63.33 प्रतिशत अभिभावक सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम प्रणाली के परिणाम को जानने में रूचि नहीं रखते है।
6. 53.33 प्रतिशत अभिभावक स्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम की गतिविधियों का बच्चों में भय है।
7. 71.66 प्रतिशत अभिभावक स्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम प्रण़ाली से शिक़्षा प़र व्यय़ बढ़ गया।

8. 86.86 प्रतिशत अभिभावक स्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम के कारण विद्यार्थियों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन हुआ है।
9. 93.33 प्रतिशत अभिभावक स्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम प्रणाली से विद्यार्थी कम्प्यूटर शिक्षा में रूचि ले रहे है।

10. 65 प्रतिशत अभिभावक स्वीकार करते हैं कि सतत् एवं व्यापक मूल्यांकन कार्यक्रम प्रणाली क़ारण विद्यार्थियों की पढ़ाई में रूचि कम हो गई है।